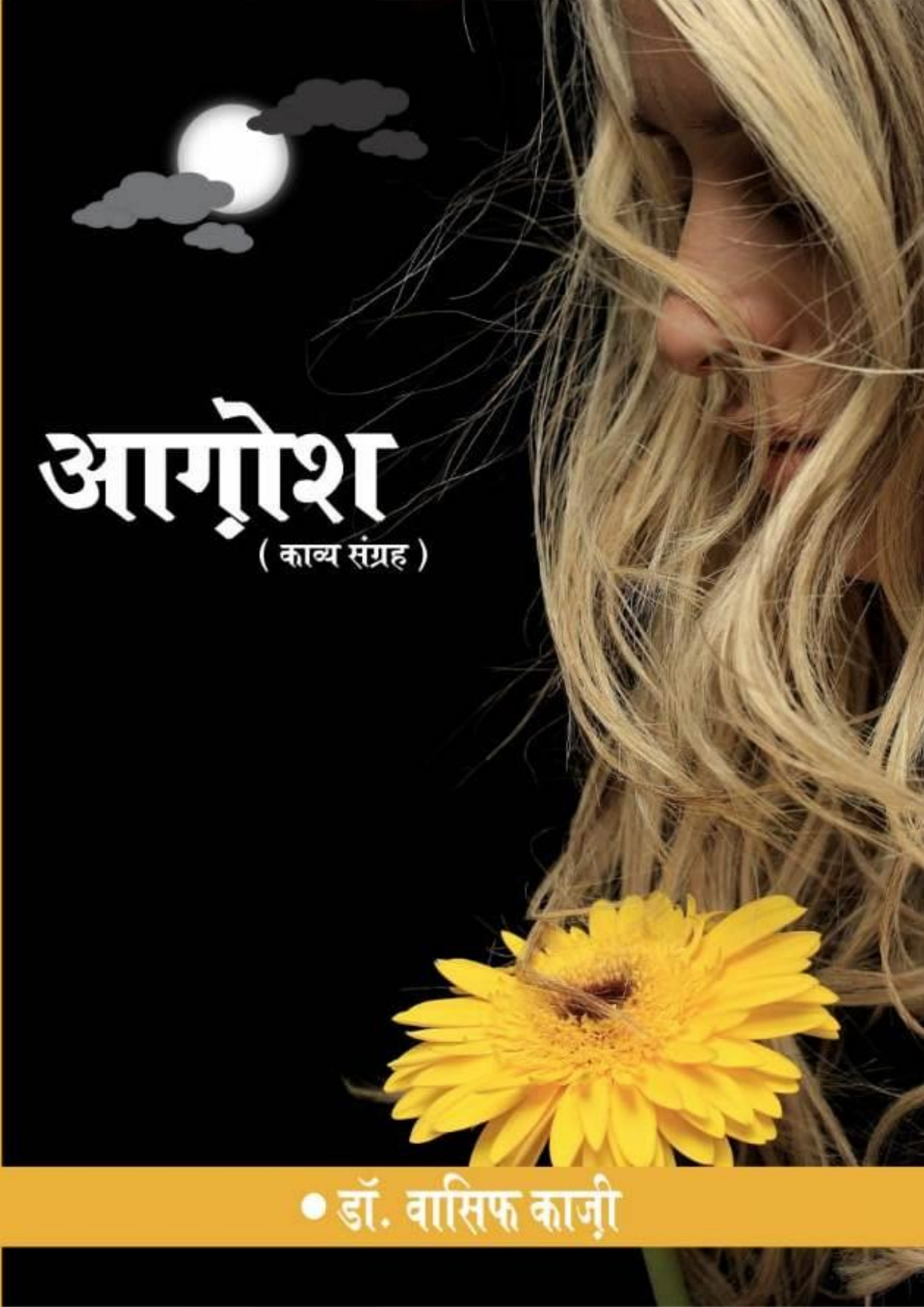

आग़ोश

(काव्य संग्रह)

• डॉ. वासिफ़ काज़ी

आग़ोश

काव्य संग्रह

डॉ वासिफ क़ाज़ी

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-81-937811-4-2

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ वासिफ क़ाज़ी

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कंप्यूटर्स, वारासिवनी

'Aagosh (kavya-sangrah) by Dr.Wasif Kazi'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

दिल से दिल तक.....

रचनाकार की कलम से...

- वैचारिक क्रांति के माध्यम से सामाजिक चेतना एवं विश्वशांति का अमर संदेश एक रचनाकार अपने काव्य के रूप में ही अभिव्यक्त कर सकता है ।
काव्य की सार्थकता तभी संभव है जब वह समाज में व्याप्त कुरीतियों, वर्जनाओं एवं अक्षमताओं का दमन कर युवाओं में एक नई स्फूर्ति का संचार करे ।

मेरी प्रथम पुस्तक काव्य संग्रह
#संकल्पना को आप सुधि पाठकों से प्राप्त सराहना एवं स्नेह ने मुझे न केवल काव्य पथ पर प्रशस्त किया अपितु मेरी त्रुटियों की ओर भी संकेत किया ,उसी के फलस्वरूप आपके समक्ष अपनी द्वितीय पुस्तक काव्य पुष्प " आग़ोश " लेकर उपस्थित हो रहा हूं ।

"आग़ोश" , हिंदी एवं उर्दू के शब्दों में गूंथी हुई वह काव्य श्रीमाला है जो हिंदी के साथ साथ उर्दू जैसी कोमल भाषा का भी महिमा मंडन करती है ।

आग़ोश का हिंदी अर्थ आलिंगन होता है अर्थात यह काव्यात्मक ध्वनि साहित्य रसिकों को अपने सुरीले स्वरों में अवश्य ही आलिंगनबद्ध कर लेगी ।

आग़ोश में इश्क की पाकीज़गी और स्मृतियों की मानस पटल पर अनुगूंज भी शामिल है ।

अंततः यही कहूंगा कि रचनाकार होने के नाते मेरे मन में संवेदनाओं के द्वंद्व चलते हैं और अपने इस काव्य संग्रह में मैंने साहित्यिक नियमावली के चक्रव्यूह को भी भेदा है परंतु मेरे ज़ेहन के ख़्यालात आपके दिलों में जरूर सिहरन पैदा करेंगे ।

आग़ोश को मूर्तरूप प्रदान करने में सहर्ष योगदान देने के लिए सम्माननीय प्रकाशक, स्नेही मित्रों एवं शुभचिंतकों को कोटिश धन्यवाद - आत्मीय आभार ।।

आपके स्नेह एवं आशीष के लिए आतुर-

धन्यवाद शुभकामनाएँ
डॉ वासिफ
क़ाज़ी इंदौर

अनुक्रमणिका

यादें	-	5
हसरते	-	6
आवाज़	-	7
सहर	-	8
वक़्त	-	9
इरादे	-	10
रास्ते	-	11
दास्तान ए इश्क	-	12
तन्हाईयां	-	13
नशीली आंखें	-	14
इश्क का जज़ीरा	-	15
दीवानगी	-	16

यादें

तुमसे दूर रहकर मेरा,
जीना क़ितना मुश्क़िल है ।
तेरे बिन इस जीवन में,
मुझको कुछ न हासिल है ।।

जो साथ गुज़ारे थे मिलकर,
वो पल याद करते हैं ।
मत जाना दूर मोहब्बत में,
बस ये फ़रियाद करते हैं ।।

तेरी हंसी वो तेरा तसव्वुर,
मुझको यूं तड़पाता है ।
नाम लेता हूं जब तेरा,
दिल ग़म से भर जाता है ।।

अब ख़्याल बन गयी हो तुम,
कहां तेरा ज़िक्र है ।
मैं हूं बेसब्र आज भी हमदम,
तुझे कहां फ़िक्र है ।।

हसरतें

नादान दिल में मेरे,
हसरतें बहुत सारी हैं ।
आंखों से बहते अश्क मेरे,
ये सौग़ात तुम्हारी है ।।

दिल में ज़ख़्म बहुत है,
नुमाइश मैं नहीं करता हूं ।
हाल- ए- दिल ज़माने को,
बताने से मैं डरता हूं ।।

दिल की बग़िया में मेरी,
गुल चाहत के महकते हैं ।
मोहब्बत की गलियों में तो,
रोज़ाना परिंदे चहकते हैं ।।

आशिक कहते इस दुनिया में
इश्क हसीन बीमारी है ।
चाहूंगा हर पल मैं तुझको,
ये कोशिश हमारी है ।।

आवाज़

हसीन वादियां इश्क की,
तुम्हें आवाज़ लगाती है ।
बैचैन कर देती है मुझको,
पल पल पास बुलाती है ।।

जानम तेरी यादों में अब,
नींदें ख़ोती जाती है ।
डूब जाता हूं मैं तुझमें,
तू मुझमें गुम हो जाती है ।।

जुनून कहो या पागलपन,
ये मेरा इश्क है जादुई ।
मेरी वफ़ाएं बस तेरे लिए,
मत होना सनम तुम हरजाई ।।

जब-जब सांसें लेता हूं,
तेरी ख़ुशबू आती है ।
तेरे तसव्वुर से बस मेरी,
नींदें भी ख़ो जाती है ।।

सहर

शब जुदाई की गुज़र जायेगी,
सहर मिलन की फ़िर आयेगी ।
बैठें हैं ज़िन्दगी के साहिल पर,
लहर इश्क की फ़िर आयेगी ।।

ख़्वाबों में दीदार किये थे मैंने,
रूबरू वो एक दिन ज़रूर आयेगी ।
न करेगी कद्र मेरे प्यार की तो,
इश्क में यूं ही ठोकरें खायेगी ।।

मायूसी का घना अंधेरा है ज़िन्दगी,
बन कर शमा वो झिलमिलाएगी ।
उलझनें बहुत हैं किरदार में मेरे,
आकर उसे वही सुलझाएगी ।।

बैचैनी, बेताबी, बेक़रारी बहुत है ,
तुमसे मिलकर ही दूर हो पायेगी ।
मेरी रूह को नहीं सुकून अब तो,
तेरे दीदार से ही राहत आयेगी ।।

वक़्त

गुज़रे वक़्त की कहानियां बहुत है,
जी लूंगा अकेले, तेरी निशानियां बहुत है ।
शोर- शराबे से घ़बराती है सांसें,
मेरी ज़िन्दगी में तन्हाइयां बहुत है ।।

तेरे साथ बिताए ख़ुशनुमा पल,
आख़िर कैसे भूला दूं ।
मिटा चुकी है मेरा नाम तू,
दिल से तेरा नाम कैसे मिटा दूं ।।

दिल में जज़्बातों की गहराईयां बहुत है ,
किसको बतायें मोहब्बत में परेशानियां बहुत है ।
मेरे ख़्वाबों ने भी कह दिया अलविदा तुझको,
दिल में बढ़ती वीरानियां बहुत है ।।

गुज़रते वक़्त के साथ सनम,
तुम न बदल जाना ।
मुझसे न होना दूर कभी,
मेरी परछाई बन जाना ।।

इरादे

शिद्दत से निभाऊंगा अब,
तुमसे किये वादे ।
मत समझना इश्क में नादान,
आज दिखाऊंगा तुम्हें अपने इरादे ।।

मेरी वफ़ाओं का तुमको,
ज़रा अहसास नहीं है ।
कह दो ज़माने से तुम,
मुझसे प्यार नहीं है ।।

कसमें-वादे ,झूठी रस्मों का क्या,
ये तो प्यार की निशानी है ।
हर दौर के आशिक की,
ये तो हसीन कहानी है ।।

बेख़बर थे तेरी मोहब्बत में,
हर लम्हा हसीन लगता था ।
न जाने कब होती सुबह,
जाने कब दिन ढलता था ।।

रास्ते

रास्ते सूने वीरान पड़े हैं,
प्यार की मंज़िल मिलती नहीं ।
दिखतें है इस भीड़ में सब,
एक बस तू दिखती नहीं ।।

जिस्म तो हरक़त में है पर,
सांसें तो चलती ही नहीं ।
रोज़ मिलन की आस में बैठा,
विरह की बेला टलती नहीं ।।

दिन न गुज़रता तेरे बिना अब,
सांझ सुहानी ढलती नहीं ।
बुझ गये सब इश्क के शोले,
दिल में आग सुलगती नहीं ।।

तेरे बिन नहीं आंखों में नींदें,
रात ये काली कटती नहीं ।
इंतज़ार में तेरे मैं हूं बैठा,
राहों से पलकें हटती नहीं ।।

दास्तान-ए- इश्क

मेरे हाथों की लकीरों में नज़र आती हो,
अपने हुस्न से क्यों मुझ पर कहर ढाती हो ।
आंखों से समाती हो दिल में मेरे,
सांस बनकर धड़कन में ठहर जाती हो ।।

इश्क में मुझको अपने बैचैन किये जाती हो ,
रूठ कर पल पल यूं ही दर्द दिये जाती हो ।
मेरी चाहत का ख़ुशरंग तुम ही हो,
इश्क का मेरे ताजमहल नज़र आती हो ।।

सहर में आफ़ताब बन जगमगाती हो,
क़मर की तरह शब में नूर बरसाती हो ।
प्यार के रंगों में रंगना है मुझको,
तुम सावन की बरसात नज़र आती हो ।।

बंद आंखों से भी मुझे नज़र आती हो ,
दिल का सुकून, ज़ेहन में ख़्याल बन जाती हो ।
दास्तान ए इश्क आओ तुम्हें सुनाता हूं,
साथ मेरे चलकर, मेरी परछाई बन जाती हो ।।

तन्हाईयां

इश्क में तेरे गुम हूं मैं,
ख़ामोश और गुमसुम हूं मैं ।
नाम से तेरे इश्क मुकम्मल,
बिन तेरे गुमनाम हूं मैं ।।

तुमसे मोहब्बत की थी मैंने,
तुमको ही बस चाहा था ।
दुनिया की इस भीड़ में मैंने,
बस अपना तुमको माना था ।।

तन्हाइयों के ये स्याह अंधेरे,
हरदम बढते जाते हैं ।
ज़िंदा है कहने को बस हम,
पल पल मरते जाते हैं ।।

तेरी यादों के तेज़ भंवर,
दिल के दरिया में बनते हैं ।।
साये की तरह ही पल पल,
हम साथ तेरे चलतें है ।।

नशीली आंखें

नशीली आंखों ने तेरी अब,
जादू सा कर दिया है ।
मुझे तेरे इश्क ने ज़ालिम,
दीवाना कर दिया है ।।

तेरी आंखों से छलकतें है,
रोज़ मय के प्याले ।
तूने मेरे दिल को क्यों,
मधुशाला कर दिया है ।।

बैचैनी के आलम में यूं,
आवारा कर दिया है ।
तेरी जुदाई ने दिल को,
बेसहारा कर दिया है ।।

वक़्त ने तेरी यादों से,
निकलना मुश्किल कर दिया है ।
मेरे ग़मों ने आज मुझे,
कितना मजबूर कर दिया है ।।

इश्क का जज़ीरा

चाहत में तेरी सुकून तलाशेंगे,
इश्क का जज़ीरा बसा लेंगे ।
रहेंगे तेरे आग़ोश में हम,
हर लम्हा कीमती बना लेंगे ।।

दूरियां दिलों की मिटा देंगे,
तुम्हें हमसफ़र बना लेंगे ।
रहेंगे तेरी धड़कनों में,
घरौंदा तेरे दिल में बसा लेंगे ।।

इबादत में तेरी मोहब्बत तलाशेंगे,
इश्क का जज़ीरा बसा लेंगे ।
ख़ामोशी से करेंगे इज़हार ए मोहब्बत,
अल्फ़ाजों में कहां मोहब्बत तलाशेंगे ।।

चलेंगे दूर कहीं चांद के रथ पर,
अपना आशियाना बसा लेंगे ।
बेपनाह इश्क के समंदर में,
इश्क का जज़ीरा बसा लेंगे ।।

दीवानगी

हर वक़्त लुभाती मुझे,
तेरे चेहरे की ताज़गी ।
तेरे हुस्न की हर अदा,
तेरी ये ख़ामोश सादगी ।।

ख़्वाबों-ख़्यालों की मल्लिका,
तुमसे क्या नाराज़गी ।
तुम इब्तिदा हो, तुम इंतहा हो ,
तुम ही मेरी दीवानगी ।।

कहीं परेशान न कर दे,
तुमको मेरी आवारगी ।
मेरे इश्क की ताक़त ही ,
ये मेरी दीवानगी ।।

बिन तेरे प्यासे लब मेरे,
ये कैसी है तिश्नगी ।
करता रहूंगा उम्र भर ,
सनम मैं तेरी बंदगी ।।

डॉ वासिफ काजी

जन्मतिथि: ५ अगस्त, १९८१
माता: श्रीमती शमा काजी
पिता: स्व.बदरुद्दीन काजी
पत्नी: श्रीमती शबाना काजी
जन्मस्थान: बड़वानी (म.प्र.)
प्रारंभिक शिक्षा: कुक्षी,जि.धार
शैक्षणिक योग्यता - एम.ए. (हिंदी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य), एम.एस-सी. (रसायन),' हिंदी काव्य एवं कहानी की, वर्तमान सिनेमा में प्रासंगिकतार्थविषय पर शोध-प्रबंध पूर्ण।
कार्यक्षेत्र: अध्यापन , शैक्षणिक कार्य एवं स्वतंत्र लेखन।
विधा: काव्य, गजल, आलेख एवं समीक्षा।

www.wasifquazi.blogspot.in

संक्षिप्त जीवन परिचय: डॉ वासिफ काजी ,का जन्म म.प्र. के बड़वानी जिले में हुआ। बाल्यकाल , कुक्षी नगर में व्यतीत कर प्रारंभिक शिक्षा, नगर के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में प्राप्त कर स्नातक एवं स्नातकोत्तर श्रेणी की

शिक्षा : बड़वानी एवं इंदौर में प्राप्त की। कुक्षी नगर में सात वर्ष तक हाईस्कूल एवं हायर सेकंडरी कक्षाओं में अध्यापन का कार्य भी कराया। सन् २००७ से इंदौर शहर की कई ख्यातनाम कोचिंग क्लासेस में एवं इस्लामिया करीमिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अनवरत कुशलता पूर्वक अध्यापन कराते हुए ज्ञान दायिनी मां सरस्वती की पुण्य आराधना कर रहे हैं।

लेखन क्षेत्र: प्रारंभ से ही साहित्यिक गतिविधियों में अभिरुचि रखने वाले वासिफ काजी के कई लेख य दैनिक नवभारत,नईदुनिया ,खबर हलचल और अनेकानेक साहित्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। श्री काजी , मातृभाषा.काम के नियमित रचनाकार हैं जिसके लिए उन्हें हिंदी ग्राम तथा मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा भाषा सारथी सम्मान से भी विभूषित किया गया।

प्रकाशन. संकल्पना (काव्य संग्रह)
ध्येय: हिंदी के प्रति पाठकों, नागरिकों और साहित्य रसिकों के मन-मस्तिष्क में रुचि और सम्मान की भावना उत्पन्न कर सका, तो यही मेरे लेखन की सार्थकता होगी।

संपर्क (भ्रमणभाष): ८०८५९०१०२१
अणुडाक: wasifquazi08@gmail.com
पता : २८/३/२, अहिल्या पल्टन, इंदौर

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड बारासिवनी,जि. बालाघाट
(म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
ISBN: 978-81-937811-4-2
₹40